प्रस्तावनाः

प्रस्तुत शोध कार्य **''जनजातियों का आर्थिक विकास और वनोपज" गुमला जिले के विशेष संदर्भ में' है** इसमे वनोपज और जनजातियों की आर्थिक विकास से संबंधित प्रभावों पर प्रकाश डाला गया है। जनजातियों की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक विकास में वनोपज की जो सहायता रही है उसे दिखाया है। आधुनिक सभ्यता एवं विश्व की प्रगति से पूर्णतः अनभिज्ञ, दूरस्थ क्षेत्रों में निवास करने वाली जनजातियाँ, भारतीय संदर्भ में अपनी निम्न सामाजिक-आर्थिक दशा के कारण देश के सबसे पिछड़े वर्ग के रूप में जानी जाती हैं।

झारखंड का गुमला जिला जनजातीय जनसंख्या बाहूल्य क्षेत्र है जिसकी कुल जनसंख्या की 66.3 प्रतिशत जनसंख्या जनजातीय है। गुमला जिले की 60 प्रतिशत जनसंख्या अपने जीवनयापन हेतु वनोपज एवं कृषि पर निर्भर है। जीवन निर्वहन के लिए ये जनजाति मॉनसून फसलों पर आधारित परंपरागत कृषि तथा वनोपज पर निर्भर रहती है। मौसम की अनिश्चितता के कारण अदृश्य बेरोजगारी इस क्षेत्र की वास्तविकता है। गुमला जिले में वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की उपलब्धता बहुत कम मात्रा में देखने को मिलती है।

अपनी जनजातीय संस्कृति, विपुल प्राकृतिक संपदा तथा दुर्लभ जैव विविधता के कारण गुमला विश्व मानचित्र में अपने साथ-साथ राज्य एवं देश को भी प्रतिबिम्बित करता रहा है। इसकी यही सामाजिक-आर्थिक विशिष्टता जनजातीय संस्कृति में रुचि रखने वाले जिज्ञासुओं एवं शोधकर्ताओं के लिए एक ऐसा सम्मोहन है, जिसकी विषय सामग्री की तुलना किसी अन्य क्षेत्र से नहीं की जा सकती है। जनजातीय क्षेत्रों से संबंधित अनेकों शोध समाजशास्त्रीय, अर्थशास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से किए गए हैं, किंतु वे शोध, शोधकर्ताओं के विषयान्तर सीमाओं तक ही सीमित रहे हैं। अर्थशास्त्रीय अध्ययन इन समुदायों पर या तो बहुत ही कम हुए हैं अथवा वे शोध इन जनजातियों की अंतर समस्याओं को स्पर्श नहीं कर पाए हैं। आर्थिक संसाधनों की विपुलता तथा विकास की चरम संभावनाओं के बावजूद गुमला जिले का विकास एक अबूझ पहेली बना हुआ है। इस क्षेत्र का सर्वांगीण विकास किसी चुनौती से कम नहीं है। 'अमीर धरती के गरीब लोग' अथवा 'विपुल संपत्ति संपन्न किंतु आर्थिक दृष्टि से पिछड़े आदिवासी' इस विरोधाभास ने मुझे शोध अध्ययन हेतु प्रेरित किया है। गुमला जिले की जनजातियों की समस्त सामाजिक,आर्थिक गतिविधियाँ हाट बाजारों से ही संचालित होती हैं। अतः हाट बाजारों के प्रत्यक्ष अवलोकनों द्वारा जनजातियों के व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से उनकी अंतर समस्याओं को

गहराई से समझने के लिए मैंने शोध अध्ययन हेतु "जनजातियों का आर्थिक विकास और वनोपज" को चुना हैं जोकि जनजातियों की आय एवं रोजगार के सृजन को दर्शता हैं। आशा है यह शोध गुमला जिले के वनोपजों द्वारा होने वाली आय एवं रोजगार के सृजन तथा वनोपज आधारित लाभप्रद आय एवं रोजगार की संभावनाओं का पता लगाने हेतु एक नई पहल होगी एवं गुमला की जनजातियों के आर्थिक उनयन (बढ़ोतरी) में कारगर भूमिका सिद्ध होग ।